एपिसोड संख्या- 36
अब तो संभल जाओ...

आलेख व अनुसंधान- डाॅ. अनुराग षर्मा
अनुवादक:श्रीमती नेहा त्रिपाठी

पात्र :-

नाना जी- 72 साल, पूर्व राजनीतिक पत्रकार और अब नीतियों की समीक्षक

नानी जी- 71 साल, पेषे से डाॅक्टर और लेखक

रल्दू- नाना-नानी को बातूनी नौकर

सुमना- 19 साल, काॅलेज की छुट्टियों में नाना-नानी के पास आई है

सुमित- 15 साल, स्कूल की छुट्टियो में अपनी दीदी सुमना के साथ नाना-नानी के यहां आया है

(तेज बारिष की आवाज, तड़ातड़ बूंदे पड़ रही है...)

सुमना- नाना जी आज फिर इतनी तेज बारिष? छुट्टियों में तो गर्मियां होती हैं...लगता इसबार की छुट्टियां आपके साथ तो मनेंगी...पर षायद घर पर ही बैठकर...

सुमित- हां सुमना दीदी, अभी तो हमें आए ही दो दिन हुए हैं और दो दिनों से लगातार बारिष और आज तो कुछ ज्यादा ही तेज है...लगता है आज भी नाना जी का डेयरी फार्म नहीं देखने जा पाएंगे...

नानी- सुमित, ये बेमौसम की बारिष है, तबियत भी खराब करती है और कभी कभी फसल भी...चलो आज तुम्हारे पत्रकार नाना जी के कुछ किस्से ही सुन लेते हैं...

रल्दू- क्या मां जी आप भी बस, दोनो बच्चों को बोर करने की बात करती हो, अरे साहब के किस्से सुनेंगे तो अपनी छुट्टियों को कोसेंगे, इससे अच्छा है बारिष में भींग भी ले और गईया के भी दर्षन कर आएं...

नाना- अच्छा रल्दू, एक तो कोई काम तुझसे होता नहीं और ऊपर से इन बच्चों को बीमार करने पर तुला है... तुझ से ये नहीं होता कि बारिष में बच्चों के लिए पकौड़े तल दे या बेसन का हलुआ ही बना दे... आया बड़ा मालकिन का चमचा...

रल्दू- देखों मां जी, साहब आज फिर चमचा कह रहे हैं...

नानी- हंसते हुए- कोई बात नहीं, मेरा चमचा ही तो कह रहें हैं...

सुमित- वैसे पकौड़े तो खा ही सकते हैं...

नाना- वाह सुमित...ये हुई ना बात...

नानी- अरे हर बारिष का मतलब पकौड़े थोड़े ही ना होता है? अरे हर मौसम के हिसाब से कुछ खाना पीना तय है, ये थोड़े ना कि बारिष हुई तो गर्म पकौड़े और गर्मी लगे तो ठंडा जूस...

सुमना- पर नानी, होता तो ऐसा ही है...

नाना- अरे, सुमना बेटी, ये नानी डाॅक्टर है ना इसीलिए डाॅक्टरी ही दिखाती रहती है, अब भई बारिष तो बारिष है...जब आए तब पकौड़े...

- हंसी-

सुमित- पर नाना जी, नानी जी बिल्कुल ठीक कह रही हैं, मेरी टीचर कहती हैं कि धरती पर ग्लोबल वार्मिंग की वजह से जलवायु परिवर्तन हो रहा है...जिस कारण बेमौसम बारिष, बाढ़, आंधी-तूफान, नए रोगों आदि का प्रकोप बढ़ रहा है...

नानी- अरे वाह सुमित, तुम तो काफी जानकारी रखते हो...

नाना- क्या सुमित, तुम भी लगते है दुनिया के बहकावे में आ गए...ये ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन ये सब तो कुछ तुम्हारी नानी जैसे पढ़े लिखे लोगों के दिमाग की उपज है...

सुमना- वैसे नाना जी, विष्वास तो मुझे भी नहीं है, कहतें हैं ग्लोबल वार्मिंग और इसबार ठंड ने सारे रिकाॅर्ड तोड़ दिए...अमेरिका के लोग तो ग्लोबल वार्मिंग के लिए अब दुआएं मांग रहे हैं...

नानी- वो तो झुठलाएंगे ही क्योंकि दुनियां में सबसे अधिक ग्लोबल वार्मिंग के लिए ये बड़े देष जिम्मेवार हैं...खासतौर से अमेरिका...

रल्दू- अच्छा मां जी वो कैसे?

नाना- मैं बताऊं वो कैसे...पकौड़े तो बनते नहीं, अब बातें बना रहा है...

नानी- अरे रल्दू को तो ये चर्चा सबसे जरूरी है...सुननी...

सुमित- क्यों नानी?

नानी- अगर इस चर्चा में ये तय हो गया कि ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, तो रल्दू सबके लिए बढ़िया फलों की सलाद काटकर लाएगा...वरना...पकौड़े...

नाना- मंजूर...

सुमना- ठीक है नाना जी मैं आपकी साइड...

सुमित- और मैं नानी की तरफ...

नानी- हंसते हुए- और रल्दू जज...

- हंसी-

नाना- कुछ नियम भी बना लेते हैं...देखो जब भी ग्लोबल वार्मिंग की बात होती है सब सीधे अंटार्कटिका यानी दक्षिणी ध्रुव और आर्कटिक यानी उत्तरी ध्रुव पहंुच जाते हैं...अमरिका, कनाडा, रूस आदि से हमें क्या करना, चर्चा सिर्फ भारत में ग्लोबल वार्मिंग के असर पर होगी और दूसरा अगर रल्दू भी चर्चा में षामिल होगा और इसकी कोई बात पसंद ना आने पर इसे उठक-बैठक करनी होगी...10 बार...

- हंसी-

रल्दू- क...क...क्यों जी मैं उठक-बैठक क्यों करुंगा...म...म...मैं तो जज हूं...

नानी- हंसते हुए- कोई उठक-बैठक नहीं करेगा, हां आपकी पहली वाली षर्त मंजूर है...

सुमना- ठीक है, तो चर्चा षुरू...चर्चा नाना जी षुरू करेंगे...

नाना- थैंक्यू सुमना...मैं तो यही कहना चाहता हूं कि ग्लोबल वार्मिंग कोई नई बात नहीं है, धरती पर हमेषा से गर्म युग, षीत काल, हिम युग आदि आते-जाते रहे हैं...और अगर मौसम में कुछ अटपटा हो भी रहा है, तो यह पूरी तरह प्राकृतिक है...भारत में ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव कुछ भी नहीं है...

सुमना- वाह वाह नाना जी...क्या षुरूआत की है...

नानी- क्या खाक षुरूआत की है...अच्छा ये बातें कोई सुन नहीं रहा वरना सुनने वाले को लगता तुम्हारे नाना के झूठ में ही सब सच है...ये बेतुकी बातों से सच नहीं छुपेगा...

सुमित- वाह वाह नानी...क्या बात कही है...

रल्दू- वो तो ठीक है, पर ये ग...ग...ग्लोबल वार्मिंग का असर भारत पर हो भी रहा है कि नहीं?

नानी- क्यों नही रल्दू...असर तो पूरा हो रहा है...चलो पहली बात, भारत ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से बुरी तरह पीड़ित है...

नाना- कैसे?

सुमना- हां नानी...कैसे?

रल्दू- हां मां जी...कैसे?

नानी- अरे रल्दू, सबसे पहली बात तीव्र गर्मी... अगर तुम भारत में पिछले बीस वर्ष के औसत तापमान पर नजर डालों तो तापमान लगातार बढ़ रहा है और इस कारण फसलों की पैदावार प्रभावित हो रही है, कीटों का प्रकोप बढ़ रहा है, हिमाचल प्रदेष में सेब का उत्पादन घट रहा है, जल्दी गर्मी आने के कारण गेंहू की उपज में कमी आ रही है...

नाना- होल्ड...डाॅ. नानी...होल्ड...ये तो सब ही कह देते हैं...कोई सबूत...

नानी- पत्रकार नाना, गर्मी बढ़ने की वजह से अब पहाड़ी और ऊंचे क्षेत्रों में मच्छर पहुचने लगे हैं, जो कई रोगों के वाहक हैं, जिनमें मलेरिया और डेंगू प्रमुख हैं। पूरी सर्दी तुम भी मच्छरों को भगाने का इंतजाम करते रहे, पहले दिवाली के बाद मच्छर भी खत्म हो जाते थे...इसी प्रकार रोगों के अन्य वाहकों को पनपने के लिए लंबा समय मिलने लगा है, जिस कारण वैक्टर जनित रोगो के मामलों में तेजी से इजाफा हो रहा है।

रल्दू- ये बात ठीक कही मां जी ने...मच्छर तो अब सालभर ही तंग करते रहते हैं...अच्छा तो इसका कारण भी ग्लोबल वार्मिंग है...

सुमित- मेरी टीचर ने कहा था कि अगर भारत में औसत तापमान में वृद्धि हुई तो भारत की खाद्य-सुरक्षा और जल-संसाधनों पर सबसे बुरा असर पड़ेगा। गर्माती धरती के कारण वर्षा-चक्र में भी परिवर्तन आ रहा है, जिससे फसल-चक्र भी प्रभावित हो रहा है...

सुमना- अरे सुमित वो तो मेरी मैडम ने भी कहा था कि विश्व में अधिकतर खेतीबाड़ी मौसम पर आधारित है। भारत में करीब 60 फीसदी खेती वर्षा पर निर्भर है। पर ये तो सभी जानते हैं...

नाना- देखो सुमित, सुमना...ये सब बाते सही है...चलो माना कि मच्छरों का प्रकोप बढ़ा है, डेंगू और स्वाइन फ्लू के मामले भी हर साल बढ़ते जा रहे हैं...लेकिन क्या इन्हे भारत पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों से जोड़कर देखा जा सकता है...

नानी- क्यों नही और वर्ष 2009 को भूल गए जबं मानसून की कमी से करीब 20 फीसदी अन्न-उत्पादन घट गया था। याद के तब दालों जैसे जरूरी खाद्यान्न की जबरदस्त महंगाई ने क्या हालत कर दी थी। और उस समय महंगाई का एक कारण यह भी रहा कि सन् 2009 में व्यापक सूखा और भयंकर बाढ़ जगह-जगह फसलों को सुखाती ओर डुबोती रही...

सुमित- ठीक कहा नानी, तेल, चीनी, प्याज तथा आलू जैसी फसलों की जितनी जरूरत है, उतनी वो तैयार नहीं हो पा रही है...

रल्दू- ठीक कहा सुमित बेटे ने...अरे हमीं से पूछों की खाने की क्या हालत है, हालांकि सरकारी प्रयासों से खाना कुछ सस्ता होने से राहत तो है, लेकिन किसान तो इस ग्लोबल वार्मिंग से सबसे अधिक पीड़ित है...

नानी- रल्दू, यही तो बात है, लेकिन कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं, लोग क्या कुछ देष ही इस काम में लगे हैं...लेकिन हमें ग्लोबल वार्मिंग की आहट को समझना होगा...

रल्दू- आहट???

नानी- हां रल्दू...और इस आहट को समझने के लिए कहीं दूर जाने की आवष्यकता नहीं है बल्कि भारत में ही इसका एक बड़ा उदाहरण है...

सुमना- भारत में? वो क्या नानी?

नानी- सुमना, अभी हाल ही में मेरे संस्थान की एक डाॅक्टरों की टीम लेह, लद्दाख के दौरे पर गई थी...

सुमित- देखा नानी रिटायरमेंट के बाद भी कितनी एक्टिव हैं...

रल्दू- अरे सुमित बेटे, डाॅक्टर भी कभी रिटायर होता है...बताओं, मां जी आप क्या कह रहीं थी...

नानी- हां तो मैं बता रही थी कि हमारी टीम जब लेह पहंुची...इसे पहले हमारी टीम पांच साल पहले गई थी, पर इसबार नजारा बदला हुआ था...

सुमित- ओह क्या सब तबाह हो गया था???

सुमना- लोग दुखी थे क्या? सब ग्लोबल वार्मिंग की वजह से...

नानी- नहीं सुमना, सुमित...वहां सब लोग और खासकर महिलाएं बहुत खुष नजर आ रही थी...

रल्दू- खुष नजर आ रही थीं...ग्लोबल वार्मिंग की आहट के कारण?

नानी- हां रल्दू, असल में हुआ क्या कि गर्मी लंबे समय तक रहने के कारण उनके पषुओं के लिए चारा सालभर उपलब्ध रहने लगा...और जो फसल वे लोग साल में सिर्फ एकबार ले पाते थे अब दो से तीन बार लेने में कामयाब हो रहे हैं...

नाना- लो...अगर ये है ग्लोबल वार्मिंग की आहट...तो भगवान करे ऐसी आहटें मिलती रहेे...जा रल्दू पकौड़े बना ला...

नानी- अरे पूरा सुन तो लो...जब गर्माहट बढ़ती है तब ग्लेषियर पिघलते हैं, पानी उपलब्ध होता है और निचले इलाकों में बाढ़ भी आती है...लेकिन ये सब तबतक जबतक ग्लेषियर हैं...जब ग्लोषियर पिघल जाएंगे तो फिर आएगा सूखे का दौर, फसल लेना दुभर हो जाएगा, फिर क्या हाल होगा ये समझना मुष्किल नहीं है...

सुमना- ओह, तो ग्लोबल वार्मिंग की वजह से लेह-लद्दाख में जो पानी उपलब्ध हो रहा है और गर्मी के कारण अधिक फसल लेने में वहां के किसान कामयाब हो रहे हैं, वो बस कुछ वक्त की बात है...ये मौसम का बदलाव कुछ समय या कहें कुछ दषकों में सभी संसाधनों को खत्म कर देगा...फिर पलायन, भुखमरी...???

नानी- हां सुमना, असल में ठंडे क्षेत्रों में और अधिक संवेदनषील पारितंत्रों में ही ग्लोबल वार्मिंग की आहट अधिक नजर आती है। इन संवेइनषील क्षेत्रों में हो रहे थोड़े से बदलाव भी आने वाले समय की कहानी कह देते हैं...

सुमित- तो नानी, जैसा लेह में हो रहा है, कुछ-कुछ वैसा ही यहां भी हो रहा है...जैसे इतनी बारिष और वो भी इस मौसम में?

नानी- ठीक समझ रहे हो सुमित, असल में लोग सोचते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग से सिर्फ तापमान बढ़ेगा असल में सबसे पहले ये समझना होगा कि मौसम में बदलावों के कारण सभी मौसमी घटनाएं तीव्र होंगी...

रल्दू- तीव्र होंगी? मतलब?

सुमना- अरे जैसे बारिष...अब लंबी अवधि की बजाय कुछ ही दिनों में सारा पानी बरस जाता है और फसलों की आगे पानी नहीं मिल पाता है...

सुमित- और ठंड भी कितने कम समय के लिए और कितनी ज्यादा होती है और गर्मियों का मौसम तो बढ़ ही रहा है...

नानी- हां, लेकिन ये भी एक पैटर्न की तरह नहीं है, मतलब हर बार एक जैसी ही बारिष होगी या समय पर नहीं होगी, ऐसा नहीं है...इसलिए तो मौसम के बदलावों को सही-सही बता पाना मुष्किल हो गया है...मौसम अनप्रिडिक्टेबल हो गया है यानी पूर्वानुमान लगा पाना बेहद मुष्किल हो गया है...

रल्दू - मां जी, साहब काफी देर से चुप हैं...क्यों साहब पकौड़े चढ़ाऊं या हार मान ली...

- हंसी-

नाना- देखो भई, ये सब तो सुन ही रहे हैं, लेकिन अभी तक ग्लोबल वार्मिंग हो रही है और ये हमारे लिए नुकसानदेय है, ये भी अभी एक अनुमान ही है...मैं अभी भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूं...

रल्दू- तो मां जी बेसन का घोल बना लूं...साहब तो कनविन्स नहीं है...

सुमना- अरे वाह...कनविन्स...

- हंसी-

नानी- रुक रल्दू...ये तुम्हारे पत्रकार नाना तो मानने को तैयार ही नहीं है...अच्छा आप ये बताओं कि इसबार आम की फसल आपके बगीचों में कैसी है?

नाना- हूं...कुछ अच्छी नहीं है...

नानी- क्यों?

नाना- अरे, समय से पहले ही इतनी बौर आ गई और अब बारिष में अधिकतर झड़ भी गईं...तो फल कहां से बनेगा...

नानी- और आम के पेड़ों में बौर समय से पहले क्यों आ गई?

नाना- अं...अं...मौसम गर्म ही पहले हो गया...तो पेड़ों को लगा की बौर का समय आ गया है और समय से पहले बौर आ गई...

नानी- तो समझे...हमारे लिए भले ही फरवरी का महीना हो...पर पेड़-पौधों, जीव-जंतु तो मौसम के आधार पर ही सब तय करते हैं जैसे कब फूल आएंगे, कब प्रजनन करना है, कब फल आएंगे...ये सब गर्मी-सर्दी से ही तय होता है...

सुमना- और ये सब संतुलन बिगड़ गया है...हैं ना नानी?

सुमित- हैं ना नानी? नानी जी लगता है सुमना ने टीम बदल ली है...अब हमारी टीम में है...

- हंसी-

सुमना- मैं टीम तो नाना जी की ही हूं, लेकिन मुझे नानी जी की बात भी सही लगने लगी है...

नाना- सुमना...धोखा...कोई बात नहीं...अच्छा डाॅ. नानी ये बताओं की चलो माना कि भारत में ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव पड़ रहा है, लेकिन इससे लड़ने के कुछ उपाय भी हैं क्या?

रल्दू- तो साहब ने हार मान ली, तो मां जी फल काट लूं...

नाना- अरे रुक...अभी चर्चा जारी है...अगर सरकार कुछ कदम नहीं उठा रही है तो इसका मतलब की ग्लोबल वार्मिंग हो ही नहीं रही...

नानी- सच कहें तो पूरी दुनिया में भारत सरकार ही सबसे अधिक कदम उठा रही है...

रल्दू- मैं फल काट ही लेता हूं...

नाना- अरे रुक, पूरी बात सुनकर फैसला लियो...

- हंसी-

नानी- भारत ग्लोबल सोलर एलायंस का हिस्सा है और इसकी अवधारण के पीछे भारत की बड़ी भूमिका है...इसी कारण सौर ऊर्जा में सबसे तेजी से आगे बढ़ रहा है भारत और इसके अलावा सन् 2030 तक भारत में सभी निजी वाहन बैटरी से चलने वाले हों इसपर भी तेजी से काम चल रहा है...

नाना- और खेती में क्या कदम उठाए जा रहे हैं...

नानी- अरे सारा फोकस को कृषि ही है...सबसे बड़ी बात है कि सरकार ने यूरिया को पूरी तरह नीम लेपित कर दिया है...

सुमित- इसका फायदा...

सुमना- अरे सुमित, नीम लेपित यूरिया होने से पौधो को नाइट्रोन धीरे-धीरे और लंबे समय तक उपलब्ध रहती है...और इस कारण कम यूरिया की जरुरत होती है और यूरिया की बर्बादी भी नहीं होती

रल्दू- नीम लेपित यूरिया का एक बड़ा फायदा मैं भी जानता हूं...

सब एकसाथ- क्या?

रल्दू- अर अब मिलावट के लिए दूध में यूरिया नहीं डाला जाता...यानी दूध में यूरिया की मिलावट पूरी तरह खत्म...

नाना जी- अरे वाह रल्दू ये तूने बिल्कुल नई बात बताई...नीम लेपित यूरिया का इतना बड़ा लाभ...चल इसी बात पर पकौड़े बना ला...

रल्दू- जी साहब...

सुमना- रल्दू भइया...ये क्या आप पकौड़े बनाकर अपनी हार स्वीकार कर रहे हो...

रल्दू- अरे वो तो बिटिया ऐसे ही...हां मां जी आप बताओ...

सुमित- नानी सरकार ने पर्यावरण सुरक्षा के लिए कई कदम तो उठाएं ही हैं, लेकिन क्या इससे कुछ फर्क पड़ेगा?

नानी- फर्क तो पड़ेगा बेटा, पर जिम्मेवारी सभी की है, भारत तो कदम उठा ही रहा है और अंतरराष्ट्रीय समझौतों में सुझाव भी देता है और इनका पालन भी करता है...लेकिन बड़े विकसित देष जैसे अमेरिका, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया आदि को भी सार्थक भूमिका निभानी होगी, उन्हे भी इन अंतरराष्ट्रीय मसझौतों का पालन करना होगा और ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम करना होगा...

रल्दू- तो ये देष क्या पालन नहीं करते?

सुमना- नहीं रल्दू भइया, ये सबसे अधिक प्रदूषण भी करते हैं और ग्लोबल वार्मिंग को झुठलाते रहते हैं।

रल्दू- अरे तो उन्हे झुठलाने दो...हमें तो नुकसान हो रहा है, हम तो ग्लोबल वार्मिंग रोकने के प्रयास करें...

नाना- अरे रल्दू, ये तो दिक्कत है...इन जहर भरी हवाओं को देषों की हदें कहां पता है, ये तो प्रदूषण अमरिका फैलाए या चीन...ये हवाएं कौनसा बार्डर मानती हैं, कहीं का जहर लेकर कहीं और पहंुच जाती हैं और नुकसान छोटे देेषों को उठाना पड़ रहा है...

सुमित- अरे वाह नाना जी, क्या सही बात कही...

सुमना- हंसते हुए- लगता है नाना जी, आपको ग्लोबल वार्मिंग की बात समझ आने लगी है...नाना- अरे, समझ क्यों नहीं आएगी, आम के बाग तो मेरे भी खराब हुए हैं, मच्छरों से मैं भी परेषान रहा हूं और चिड़ियों का कम चहचहाना मुझे भी खलता है...जा रल्दू फल काट ला...

नानी- लो बारिष में फल? बीमार पड़ना है क्या...जा रल्दू सबके लिए गर्मागर्म पकौडे और चाय ले आ...

सुमित और सुमना- एकसाथ- अरे वाह...

रल्दू- अभी लाया मां जी, मैने आलू, प्याज तो काट ही रखे थे...अभी लाया...

नाना- अरे रल्दू, कुछ गोभी और मिर्च के पकौड़े भी बना लियो...

रल्दू- बनाता हूं साहब, इतनी ग्लोबल वार्मिंग से लड़ते हुए हमारे किसानों की बदौलत ही हम ये पकौड़े खा पा रहे हैं, उन सभी को धन्यवाद देते हुए और आज की चर्चा में मां जी को विजेता घोषित करते हुए, मैं चला पकौड़े और चाय बनाने...

- हंसी-

नाना- अरे हिसाब से बनाइयों, कहीं बर्बाद ना हों... ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हर वर्ष हम यानी दुनियाभर में करीब 1.3 अरब टन खाना बर्बाद हो जाता है। हो सकता है आज हम उन भाग्यशालियों में से हो जो मनचाहा खा सकतें हैं...

सुमना- हां नाना जी, लेकिन अगर हम सब ग्लोबल वार्मिंग से लड़ने का मन बना लें, तो ये जीवन तो चलता रहेगा...

नानी- बिल्कुल, और सिर्फ सरकार के चाहने से ग्लेबल वार्मिंग में कमी नहीं की जा सकती बल्कि सभी लोगों को साथ आना होगा और सभी को मिलकर ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के अपने-अपने स्तर पर प्रयास करने होंगे...

नाना- सही बात है, मेरी तरह कई लोगों को लगता है कि ग्लोबल वार्मिंग से वो पीड़ित नहीं होंगे, पर वो सब गलत हैं...ये धरती अपने साथ हुए दुव्र्यवहार का सबसे ही बदला लेगी...अब तो संभल जाने का वक्त है...इस धरती को मनाने का वक्त है...

सुमना और सुमित- एकसाथ- वाह वाह नाना जी...वाह - तालियां बजाते हैं-

नानी- चलो मैं जरा रसोई में देखती हूं...

नाना- अरे तुम कहा चली डाॅ. नानी, आज तो मैने हार मानी है...रसोई में मैं देखता हूं...- चिल्लाकर- अरे रल्दू तेल चढ़ा दिया...

रल्दू- जी साहब...

- हंसी-

-समाप्त-